Research Journal of Language, Literature and Humanities _____E-ISSN 2348-6252
Vol. **5(4),** 5-9, October **(2018)** *Res. J. Lang. Lit. Humanities*

मराठी संस्कृती के संतो के साहीत्य की कुछ सांगितीक संतवाणी

वंदना मधुकरराव देशमुख[1] **एवं शिरीष कडू**[2]
[1]कला महाविद्यालय मलकापूर, अकोला, भारत
[2]श्री.शिवाजी कला, वाणीज्य विज्ञान महाविद्यालय, अकोला, भारत
deshmukhvmd123@gmail.com

Available online at: www.isca.in, www.isca.me
Received 26th April 2018, revised 10th September 2018, accepted 11th October 2018

सारांश

मराठी संस्कृती में संत परंपरा उच्चकोटी की है। इन संतो का साहीत्य मराठी संस्कृती मे महत्वपूर्ण है। इनकी साहीत्य काव्य रचना में ईश्वरीय आराधना से लेकर समाज प्रबोधन तक के विषय सम्मिलीत है। संस्कृती इस शब्द के अंर्तगत मानव समूह के कोई भी समाज के आचार, विचार, सामाजीक, आर्थिक व्यवहार, शास्त्र, कला, उपासना, धर्म, संप्रदाय, सण, उत्सव, देवदेवता, निती, कायदे, जीवन विषयक तत्वज्ञान, आदी मानवी जीवन के अंगो का दर्शन प्रतिपादीत होता है। मानवी जीवन के कुछ अंगो को संतों ने अपनी साहीत्य काव्य रचना से प्रगट किया है। इस साहीत्य काव्य रचना में संस्कृती के दैनंदिन विधी, प्रसंगानूरूप विधी, ईश्वरीय नामस्मरणों के मंगलमय गीत, उनकी शक्ती का प्रचार, महती एवं कुछ गीतों से समाज प्रबोधन का संदेश आदी गीत जो की संगीत के उपशास्त्रीय गीतप्रकारों में लिए जाते है। इनका अध्ययन किया गया है, उन्हें प्रस्तुत शोधनिबंध में उपरोक्त विषय के अंर्तगत दिखानें का प्रयास कर रही हू।

संकेत शब्द: मराठी संस्कृती और सांगितीक संतवाणी

प्रस्तावना

वैदिक काल से ही संगीत का संस्कृती, अध्यात्म, धार्मिक ग्रंथ, धार्मिक विधी, राजदरबार, इन सभी से गहरा संबंध रहा है। ऐसा ही संबंध समाज एवं संगीत रहा है, यह संबंध संतो के सांगितीक साहीत्य से जुडा है। मनुष्य भावनाशील होता है, उनका जीवन संस्कार एवं संस्कृती के नियमों में बॅधा होता है। इन संस्कृती के संस्कारों मे संगीत का अंर्तभाव होता है।। ऐसा ही साहीत्य में होता है। साहीत्य में शब्दों का स्थान महत्वपूर्ण होता है, इन्हीं शब्दों को एकत्रित कर काव्या बनता है, और इस काव्या को संगीतिक गुणों का आधार लेकर शब्दाप्रधान संगीत बनता है, इसी शब्दप्रधान काव्य का आधार संतोने अपने साहीत्या में लिया है, और यह 'भक्ति संगीत' के नाम से जाना जाता है।नए नए गीतों के पदबंध मराठी साहीत्य में दिखाई देते है। इन्ही पदबंधो को संगीत में उपशास्त्रीय गीतप्रकारों से जाना जाता है, और संस्कृती के माध्यम से जनसामान्य तक पहुचाया जाता है, देखा जायें तो संतों का साहीत्य समाज और संगीत के संबंध में प्रभावशील रहा है। इस संत साहीत्य का मानवी जीवन में आध्यात्मिक विकास में बडा स्थान है। संतो के विविधांगी मराठी साहीत्य अंर्तभूत सांगितिक गीतप्रकारों के प्रयोग से मानव की आध्यात्मिक उन्नती, विकास, और समाज जागृती में अपना स्थान है। इन संतो ने अपनी साहीत्य रचना लोकसंगीत एवं रागदारी संगीत में की है। इनकी रचना मे ईश्वर आराधना से लेकर समाज जागृती तक के विषय सम्मिलीत है।

इन विषयों को ओवी, अभंग, आरती, जोगवा, भारूड, आदी गीतप्रकारो में बध्द किया है। इस स्वरबध्द रचनाओं में संत ज्ञानेश्वर, संत नामदेव, संत एकनाथ, संत तुकाराम,संत रामदास स्वामी, आदी संतोका नामउल्लेख है। इन्होंने अपनी साहीत्य रचनाएँ संगीत के माध्यम से मराठी संस्कृति को सर्मपित कि है। मराठी संस्कृती में इन संतों की संत परंपरा उच्चकोटी की मानी जाती है।इसिलिए कहा जाता है, "साधू संत येती घरा तोचि दिवाळी दसरा" इस प्रकार प्रस्तूत शोधनिबंध मे मराठी सस्कृंति के संतो के साहीत्य की कुछ सांगितिक संतवाणी दिखाने का प्रयास कर रही हू।

संशोधन पद्धती

प्रस्तुत शोधनिबंध में ऐतिहासीक संशोधन पद्धती का चुनाव किया गया है। ऐतिहासीक संशोधन पद्धती में साहीत्य, संस्कृती, भाषा, कला, आदी विषयों के अंर्तगत हो गये एवं होनेवाले कार्योपर वैज्ञानिक रूप से अध्ययन करती है। इसिलिए इस शोध पद्धती का प्रस्तुत शोध निबंध में चुनाव किया गया है। इस पद्धती के चुनाव से मराठी संस्कृती के प्राचीन संतवाणी का अध्ययन करके प्रस्तूत करने का प्रयास कर रही हु।

संशोधन उद्देश: मराठी संस्कृती के अंर्तगत संतो का जो साहीत्य है, वह साहीत्य रागदारी संगीत एवं लोकसंगीत मिश्रीत है। उपरोक्त साहीत्य में दैनंदिन धार्मिक विधी से लेकर समाज जागृती तक के विषयों का अंर्तभाव है। उन्हें प्रस्तूत शोध निबंध से आज की नवपिढी एवं समाज में प्रस्तूत करने के उद्देश से इस विषय का चूनाव किया गया है।

संशोधन व्याप्ती: प्रस्तूत शोध निबंध मे संतो का साहीत्य है, जो कि रागदारी संगीत एवं लोकसंगीत पर आधारीत होते हूए मराठी संस्कृती में महत्वपूर्ण है। ऐसा ही कूछ साहीत्य शोध निबंध में प्रस्तूत करने का प्रयास कर रही हू।

संशोधन उपयोगिता: प्रस्तूत शोध निबंध मे संतो का जो साहीत्य आया है, उस साहीत्य को हम आज भी दैनंदिन धार्मिक विधी एवं प्रसंगानूरूप उपयोग में लाते है। यह दिखाने का प्रयास इस शोधनिबंध से किया है।

विषय प्रवेश

महाराष्ट्र के मराठी संस्कृती मे संत साहीत्य की परंपरा उच्चकोटी की है।[१] संस्कृती इस शब्द में किसी भी समाज के आचार-विचार, धर्म, निती, इनके नियमो का एवं जीवनविषयक तत्वज्ञान का दिग्दर्शन होता है।[२] इन्ही जीवनविषयक तत्वज्ञान में संस्कृती के दर्शन, धर्म, संस्कार, सभ्यता, कला, संगीत, इन गुणों का समावेश होता है।[३] इन्ही गुणों का आधार लेकर संतो ने अपनी काव्यरचना समाज तक पहूचायी है। उन संतों में संत ज्ञानेश्वर, संत नामदेव, आदी का नाम लिया जाता है। इन संतो ने मानव समाज की आध्यात्मिक उन्नती, समाज जागृती, एवं दैनिक धार्मिक विधी के लिए मराठी साहीत्य उपलब्ध् की है।[४] जो की रागदारी संगीत एवं लोकसंगीत पर आधारीत है। इनकी रचनाओं के अनेक विषय ईश्चर से संबंधित है। इसमे ईश्वर का नामस्मरण, उनकी कार्यो की महती, आदी विषय है, जो की संगीत के विविध उपशास्त्रीय गीतप्रकारो में बध्द है।[५]

संतो के सांगितिक काव्य रचना का परिचय

संत ज्ञानेश्वर: संत ज्ञानेश्वर १३वी शताब्दी के संत कवी एवं भागवत संप्रदाय के प्रवर्तक है, इन्होंने अध्यात्म एवं तत्वज्ञान विषयक विचारों को मराठी में प्रतिपादीत किया इनकी साहीत्य रचना में ओवी, अभंग, आदी रचनाए है। उसीप्रकार जगकल्याण के लिए ईश्वरसे "पसायदान" के माध्यम से की गई "प्रार्थना" है। इनकी साहीत्य रचना में भावार्थ दिपीका, स्फूटकाव्य, हरीपाठ, अमृतानूभव, ऐसे ग्रंथों में काव्यरचना प्रसिद्ध है।[६]

संत नामदेव: यह महाराष्ट्र के संतकवी जाने जाते है। इन्होनें संस्कृत 'गीता तत्वज्ञान' प्राकृत मराठी भाषा में करके सामान्य लोंगो तक पहूचायी। इनके साहीत्य रचना में अभंग, आरती, चरण आदी रचनाएँ है। उसीप्रकार उनकी रचनाएँ प्रासंगिक दैनंदिन धार्मिक विधी में प्रयोग में लायी जाती है।[७]

संत एकनाथ: यह वारकरी संप्रदाय के एक सुप्रसिद्ध संत थे। इनकी साहीत्य रचना वारकरी, ईश्वरभक्त, साहीत्यिक, एवं सामान्य रसिक आत्मसात करते है। इन्होंने भक्तियोग, वेदांत योग, का शिक्षण लिया इनके साहीत्य रचना में जोगवा, भारूड, गोंधळ, आरती आदी रचनाए है। इनकी साहीत्य रचनाओं में ईश्वरीय गुणसंर्कीतन दिखाई देता है। और प्रासंगिक दैनंदिन धार्मिक विधी में भी प्रयोग में लायी जाती है।

संत तुकाराम: संत तुकाराम महाराज १७वी शताब्दी के वारकरी संप्रदाय के संत है। इनका साहीत्य वारकरी संप्रदाय के लिए महत्वपूर्ण है, इनकी साहीत्य रचना अभंग, भूपाळी, गोंधळ, आदी गीतों मे देखने को मिलती है, जो की महाराष्ट्र के सांस्कृतीक परंपरा के प्रतीक है।

संत रामदास स्वामी: संत रामदास स्वामी कवी एवं समर्थ संप्रदाय के संस्थापक है। परमार्थपर स्वधर्मनिष्ठा, राष्टप्रेम इनके प्रचारार्थ महाराष्ट्र मे प्रबोधन एवं संगठन का कार्य किया। इनकी साहीत्य रचना में 'मन के श्लोक' एवं प्रसंगानूरूप धार्मिक विधी

मे अपनायी जाती है। मराठी संस्कृती के धार्मिक विधी में ईश्वर के रूपों का मंगलमय गीत गाते है, उन गीतों का संग्रह 'आरती'के विविध स्वरूप में देखा जा सकता है।[८]

रागदारी संगीत एवं लोकसंगीत के आधार पर संतो की कुछ सांगितिक संतवाणी

संत एवं संगीत - संत एवं संगीत का अतुट सहसंबंध है। क्योंकि इनकी रचनाए आज भी सर्वसामान्य भक्तजन गाते हुए दिखाई देते है। इनकी गायन कला में किसी भी प्रकार के संगीत नियमों का पालन नहीं होता।इसके विपरीत कूछ लोग सांगितीक रागों पर आधारीत इन्ही काव्य का गायन रागनियमों सहित करते हूए दिख पडते है।जैसे की 'अभंग' कूछ संतो के अभंगो में बडा एवं छोटा अभंग लिखा है। मराठी साहीत्य वर्गीकरण नूसार बडा अभंग देवद्वार के नाम से एवं छोटा अभंग देवीवर नाम से जाना जाता है।[९]

प्रस्तूत शोधनिबंध में संतो द्वारा की गई रचनाएँ 'मराठी भक्तिसंगीत' में महत्वपूर्ण है। इस मराठी भक्तिसंगीत का विशेष है 'अभंग' अभंग यह एक वृत्तछंद है। और मराठी के लगभग संतों के साहीत्य में अभंग का प्रचलन है। और इस छंद का प्रयोग केवल मराठी साहीत्य में होता है। यह लाक्षणिय है। इसिलिए सभी संतो के साहीत्य में अभंग की रचानाएँ दिखाई देती है।

संत ज्ञानेश्वर

अभंग
राग:- गोरखकल्याण
मोगरा फुलला मोगरा फुलला। फुले वेचिता बहरू कळियासी आला॥
अभंग
राग:- यमन
पांडुरंग कांती दिव्य तेज झळकती।रत्न टिळा फांकती प्रभा॥[१०]
ओवी

ओवी: यह एक काव्यप्रकार है।ओवी का वर्गीकरण अनेक प्रकारों में देखा जा सकता है। इसके हर एक प्रकार में नए नए आशय का अंर्तभाव है।आशयनूसार रस का अंर्तभाव ओवी में आता है।[११] जैसे ओवी मे कौटूंबिक रस के साथ भक्तिरस भी सम्मिलीत रहता है।[१२] ओवी का जन्म प्राकृत छंद षट्पद एवं अर्धचतुष्पदी से हुआ है। इसे तालगेय एवं स्वरगेय में गाते है।ऐसी ही एक भक्तिरस ओवी प्रस्तूत है।[१३]

ओवी
राग:- बैरागी भैरव
पैल तो गे काऊ कोकता हे। शकून गे माये सांगता हे॥[१४]

पसायदान: संत ज्ञानेश्वर महाराज विरचित "ज्ञानेश्वरी" इस ग्रंथ का संपूर्ण सारांश "पसायदान" में अवतरित किया है। पसायदान यह प्रार्थना है। इसमें धर्म, पंथ, काल छोडकर केवल मनुष्य के लिए की गई प्रार्थना है। ईश्वर "विश्वात्माक" है,यही सार पसायदान में है।वेब साईट
पसायदान
राग:- भैरवी
आता विश्ववात्मके देवे येणे वाग्याज्ञे तोषावे। तोषोनि मज दयावे पसायदान हे॥[१५]

संत नामदेव

अभंग
राग:- भिमपलासी
अमृताहुनि गोड नाम तुझे देवा। मन माझे केषवा का बा ने घे॥[१६]
अभंग
राग:- अल्हैयाबिलावल,आसावरी, जोगिया मिश्रीत
तीर्थ विठ्ठल क्षेत्र विठ्ठल। देव विठ्ठल देवपूजा विठ्ठल॥वेब साईट
आरती
युगे अठ्ठावीस विटेवरी उभा। वामांगी रख्माई दिसे दिव्य शोभा॥
चरण
घालीणं लोटांगण वंदीन चरण डोळयांनी पाहीन रूप तुझे॥

संत एकनाथ

अभंग: अभंग यह एक काव्यप्रकार है, यह एक वृत्तछंद भी है। इसमे आध्यात्मिक आशय रहता है। अभंग यह तालगेय रहता है। कई बार अभंग "रागदारी संगीत" मे गाते समय तालों का बंधन रहता है। विविध रागों में अभंग की रचना देखी जा सकती है।[१७]
अभंग
राग यमन
सुंदर ते ध्यान उभे विटेवरी । कर कटावरी ठेवोनिया ॥

भारूड: भारूड मे अनेक विषय रहते है, जो की सामाजिक, वैवाहीक, जैसे आदी संदर्भ मे होते है। प्राचीन समाज मे समाजप्रबोधन के लिये इस गीतप्रकार के माध्यम से प्रचार किया जाता था। उदाहरण हेतू ऐसा ही एक उदाहरण निम्नांकित दिया गया है। किंतू उसमे "वैवाहिक जीवन" का विषय रखा गया है।

भारूड

दादला नको ग बाई। मला नवरा नको ग बाई॥[१८]

संत तुकाराम

अभंग

राग:- धानी

आनंदाचे डोही आनंद तरंग।आनंदची अंग, आनंदची अंग, आनंदाचे॥

गीत

राग:- देशकार

१ ओंकार प्रधान रूप गणेशाचे।

राग -भूपाली और देसकार मिश्रित

२ खेळ मांडियेला वाळवंटी घाई।

नाचती वैष्णव भाई रे।।[१९]

गोंधळ

राजस सुंदर वाळा पाहो आलीया सकळा वो।[२०]

रामदास स्वामी

मनाचे श्लोक: "मन के श्लोक" यह समर्थ रामदास स्वामी रचित मानवी मन को मार्गदर्शन पद्य है। मन के श्लोक प्रात:कालीन एवं सायंकालीन प्रार्थना में गाये जाते है।

मनाचे श्लोक

गणाधीश जो ईष सर्वा गुणांचा। मुळारंभ आरंभ तो निर्गुणाचा॥[२१]

गणपती आरती

राग:- यमन

सुखकर्ता दू:खहर्ता वार्ता विघ्नाची। नूरवी पूरवी प्रेम कृपा जयांची॥[२२]

शंकर आरती

राग:- यमन

लवधवती विक्राळा ब्रम्हांडी माळा । विषे कंठ काळा त्रिनेत्री ज्वाळा॥

गोंधळ

राग:- कल्याण

ब्रम्ही माया उदो। त्रिगूण काया उदो। तत्व छाया उदो। चारीवाणी उदो॥

उपसंहार

प्रस्तूत शोध निबंध में मराठी संस्कृती के संतो के साहीत्य रचानाओं का बहूत बडा योगदान है, संस्कृती का कार्य एक पिढी से दूसरी पिढी तक का सक्रंमण करना रहता है, इसमे संस्कृती सक्रंमण, संवर्धन, जतन का कार्य करती है, और इसी संस्कृती के माध्यम से यह साहीत्य आज भी उपलब्ध दिखाई देता है इनकी साहीत्य रचना में प्रपंच, ईश्वर आराधना, समाज जागृती, मार्गदर्शनपर पद्य, प्रार्थना आदी. विषयों का अंर्तभाव रहा है, संतोने इस साहीत्य रचना का प्रचार एवं प्रसार अलग अलग स्थिती मे किया है, इसके लिए संगीत का आधार लिया है इनकी बहूतसी रचनाएँ 'रागदारी संगीत एवं लोकसंगीत' के आधार पर रचित है, और संगीत से यह रचनाए जनमाध्यम तक पहूची है, आज भी इन साहीत्यो को प्रसंगानूरूप धार्मिक विधीयों में गाया जाता है।

संदर्भ सूची

1. पाटील प्राचार्य, भास्काररराव नारायण (२००९), प्राचीन महाराष्ट्र वाङ:मय वैभव, प्रकाशक - श्री रंगराव पाटील, प्रकाशन- प्रशांत पब्लिकेशन्स, जळगांव
2. प्रा.द.के. केळकर (२००५). संस्कृति संगम - प्रकाशक श्री. ह. अ. भावे, वरदा प्रकाशन, आवृत्ती ऑक्टोंबर २००५, पूणे
3. मित्तल अंजली (२०१०). भारतीय सभ्यता संस्कृति एवं संगीत, प्रकाशक-मदन सचदेवा, प्रकाशन-कनिष्क पब्लिशर्स, दिल्ली
4. परळीकर कमलाकर (२०११). समर्थ रामदासांचे संगीत चिंतन प्रकाशक-प्रसाद कुळकर्णी, प्रकाशन-संस्कार प्रकाशन, मुंबई
5. कुळकर्णी श्रीधर रंगनाथ (२००५). ओवी ते लावणी, प्रकाशक - डॉ. प्रभाकर मांडे, प्रकाशन-का.स. वाणी मराठी प्रगत अध्ययन संस्था, धुळे
6. जोशी नाग (२०१२). प्राचीन गीतमंजुषा, प्रकाशक-संजय वि भागवत, प्रकाशन- मौज प्रकाशन गृह, मुबंई

7. सुंठणकर बा.र. (२०१७). महाराष्ट्र संतमंडळीचे ऐतिहासीक कार्य, प्रकाशक-राजन बावडेकर, प्रकाशन-लोकवाड:मय गृह, मुंबई

8. परळीकर कमलाकर (२०११). समर्थ रामदासांचे संगीत चिंतन प्रकाशक-प्रसाद कुळकर्णी, प्रकाशन-संस्कार प्रकाशन, मुंबई

9. संगोराम श्रीरंग (२००३). आस्वादक संगीत समीक्षा, प्रकाशक - दिलीप माजगांवकर, प्रकाशन-राजहंस प्रकाशन, पूणे

10. पिशवीकर सुलभा (२००५). गोडबोले अच्युत, नादवेध, प्रकाशक-दिलीप माजगांवकर, प्रकाशन-राजहंस प्रकाशन प्रा.लि., पूणे

11. इनामदार कल्याण (२००६). गीतरचना: स्वरूप आणि विकास, प्रकाशक-अरूण जाखडे, प्रकाशन-पदमगंधा प्रकाशन, पूणे

12. कोळी प्राचार्य विठठल (२०१२). महाराष्ट्रातील लोकगीते, प्रकाशक साकेत बाबा मांड, प्रकाशन-साकेत प्रकाशन प्रा.लि. आवृत्ती २०१२, औरंगाबाद *जोशी ना ग,* प्राचीन गीतमंजुषा, प्रकाशक - संजय वि भागवत, प्रकाशन- मौज प्रकाशन गृह, मुबंई

13. इनामदार कल्याण (२००६). गीतरचना: स्वरूप आणि विकास, प्रकाशक-अरूण जाखडे, प्रकाशन-पदमगंधा प्रकाशन, पूणे

14. पिशवीकर सुलभा, गोडबोले अच्युत (२००५), नादवेध, प्रकाशक-दिलीप माजगांवकर, प्रकाशन-राजहंस प्रकाशन प्रा. लि., पूणे

15. पांगारकर लक्ष्मण रामचंद्र (२००५). भक्ति मार्ग प्रदिप, प्रकाशक- ह.अ.भावे, प्रकाशन-वरदा प्रकाशन प्रा.लि., पूणे

16. भडकमकर रोचना (२००४). संगीत यात्रा हिंदूस्तानी संगीतातील रागांचा आस्वादक परिचय, प्रकाशक-अरूण पारगावंकर, प्रकाशन - प्रतिमा प्रकाशन आवृत्ती, पूणे

17. कुळकर्णी श्रीधर रंगनाथ (२००५). ओवी ते लावणी, प्रकाशक - डॉ. प्रभाकर मांडे, प्रकाशन-का.स. वाणी मराठी प्रगत अध्ययन संस्था, धुळे

18. देखणे रामचंद्र (१९९७). प्रकाशक भारूड आणि लोकशिक्षण-अरूण जाखडे, प्रकाशन-पदमगंधा प्रकाशन, पूणे

19. पिशवीकर सुलभा, गोडबोले अच्युत (२००५). नादवेध - प्रकाशक - दिलीप माजगांवकर, प्रकाशन - राजहंस प्रकाशन प्रा.लि., पूणे

20. देखणे डॉ रामचंद्र (२०१२). गोंधळ: परंपरा स्वरूप आणि आविष्कार- प्रकाशक - अरूण जाखडे प्रकाशन - पदमगंधा प्रकाशन, पूणे

21. परळीकर डॉ. कमलाकर (२०११). समर्थ रामदासांचे संगीत चिंतन प्रकाशक- प्रसाद कुळकर्णी प्रकाशन-संस्कार प्रकाशन, मुंबई

22. पिशवीकर सुलभा, गोडबोले अच्युत (२००५). नादवेध-प्रकाशक-दिलीप माजगांवकर, प्रकाशन-राजहंस प्रकाशन प्रा.लि., पूणे